प्रतिदर्श प्रश्न पत्र 10 (2019–20)

हिन्दी – अ (कोड–002)

कक्षा– 10

निर्धारित समय– 3 घंटे **अधिकतम अंक – 80**

सामान्य निर्देशः–

1. इस प्रश्न–पत्र में चार खंड हैं– क, ख, ग और घ।
2. सभी खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
3. यथासंभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रम से लिखिए।
4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15–20 शब्दों में लिखिए।
5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।
6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60–70 शब्दों में लिखिए।

खण्ड–क (अपठित अंश) 10

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िये और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 10

आत्मविस्तार का मतलब है हमारे पास जो कुछ अच्छा है उसे प्रकृति में बाँटें। प्रकृति विराट है और उसमें जड़–चेतन सारे प्राणी समाविष्ट हैं। मैं कुछ नहीं हूँ, किसी अदृश्य शक्ति का दिया हुआ उपहार हूँ। प्रकृति ने हमारे लिए सारे संसाधन जुटाए हैं। प्रकृति स्वयं हमें उपहार के रूप में ग्रहण एवं स्वीकार करती है। हमें यह भली–भाँति समझना चाहिए कि अगर हम उसके लिए उपहार नहीं होते, तो प्रकृति हमारे पालन–पोषण, सुरक्षा, संवर्धन के लिए इतने संसाधन नहीं जुटाती। प्रकृति हमारी हर सुख–सुविधा का ध्यान रखती है। प्रकृति के लिए हममें से कोई छोटा–बड़ा नहीं है। वह सब पर समभाव से स्नेह वर्षा करती है। यह सब कुछ निःशुल्क है। क्या कभी हम निःस्वार्थ भाव से किसी की सेवा–सहायता के लिए प्रस्तुत होते हैं? प्रस्तुत होने की बात दूर, इन चीजों पर हमारा कभी ध्यान ही नहीं रहता है। यहाँ तक कि अनंतवत्सला प्रकृति को प्रेम से कुछ पल देखने के लिए हम कभी समय ही नहीं निकालते हैं। प्रकृति से साक्षात्कार नहीं होने के कारण मनुष्य अपनी मूल प्रकृति से कोसों दूर है। उसकी प्रवृत्ति प्रकृतिजन्य नहीं है अर्थात् वह अपने स्वभाव में नहीं है।

1. प्रकृति किस पर स्नेह वर्षा करती है? 2

उत्तर : प्रकृति सब पर समभाव से स्नेह वर्षा करती है।

2. आत्मविस्तार से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : आत्मविस्तार से मतलब है– हमारे पास जो कुछ अच्छा है, उसे हमें प्रकृति में बाँटना चाहिए।

3. प्रकृति के लिए किस प्रकार हम एक उपहार हैं? उल्लेख कीजिए। 2

उत्तर : प्रकृति के लिए हम एक उपहार हैं, क्योंकि वह हमारे पालन–पोषण, सुरक्षा व संवर्धन के लिए अनेक संसाधन जुटाती है और हमारी प्रत्येक सुख–सुविधा का ध्यान रखती है।

4. मनुष्य अपनी मूल प्रकृति से कोसों दूर क्यों है और उसकी मूल प्रवृत्ति कैसी है? 2

उत्तर : प्रकृति से साक्षात्कार नहीं होने के कारण मनुष्य अपनी मूल प्रकृति से कोसों दूर है। उसकी प्रवृत्ति प्रकृतिजन्य नहीं है।

5. हमारे लिए सारे संसाधन किसने जुटाए हैं? 1

उत्तर : हमारे लिए सारे संसाधन प्रकृति ने जुटाए हैं।

6. उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। 1

उत्तर : प्रकृति की देन।

खण्ड–ख (व्यावहारिक व्याकरण) 16

2. निर्देशानुसार उत्तर लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. रवि ने बाल कटवाए पर संतुष्ट नहीं है। (सरल वाक्य में बदलिए)

उत्तर : रवि बाल कटवाकर संतुष्ट नहीं है।

2. उसके स्टेशन पर पहुँचते ही गाड़ी चल दी। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : जैसे ही वह स्टेशन पहुँचा, गाड़ी चल दी।

3. मैंने एक बहुत बीमार आदमी को देखा है। (वाक्य भेद लिखिए)

उत्तर : सरल वाक्य।

4. वहाँ एक नलकूप है जो बिजली से चलता है। (रचना के आधार पर वाक्य–भेद लिखिए)

उत्तर : मिश्र वाक्य।

3. निर्देशानुसार वाच्य परिवर्तन कीजिए। $1 \times 4 = 4$

1. रघु खाना पकाता है। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : रघु के द्वारा खाना पकाया जाता है।

2. नानी के द्वारा कहानी सुनाई गई। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

उत्तर : नानी ने कहानी सुनाई।

3. यश नहीं सोता। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : यश से सोया नहीं जाता।

4. मुकेश द्वारा किताब खरीदी गई। (कर्मवाच्य में बदलिए)

उत्तर : मुकेश ने किताब खरीदी।

4. निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों का पद-परिचय लिखिए। $1 \times 4 = 4$

1. **हाथी** बुद्धिमान पशु होता है।

उत्तर : जातिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ताकारक, **होता** क्रिया का कर्ता।

2. रमेश ईमानदार और **विश्वास के** योग्य बालक है।

उत्तर : भाववाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन, संबंध कारक, परसर्ग **के** योग्य से संबंध प्रकट करता है।

3. **झूठा** आदमी सम्मान नहीं पाता।

उत्तर : गुणवाचक विशेषण, मूलावस्था, पुल्लिंग, एकवचन, इसका विशेष्य **आदमी** है।

4. चूहे बहुत तेज **दौड़ते हैं।**

उत्तर : अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, कर्तृवाच्य, बहुवचन, पुल्लिंग, इसके कर्ता **चूहे** हैं।

5. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए- $1 \times 4 = 4$

1. अद्भुत और शांत रस के स्थायी भाव लिखिए।

उत्तर : अद्भुत रस का स्थायी भाव विस्मय और शांत रस का स्थायी भाव निर्वेद है।

2. निम्नलिखित काव्यांश में निहित रसों के नाम लिखिए।

करती विकल विलाप, अहिल्या हुई अचेतन।

मानो उसके अरमानो का नत था केतन।।

उत्तर : काव्य पंक्तियों में करूण रस है।

3. स्थायी भाव कितने होते हैं?

उत्तर : स्थायी भाव 11 होते हैं।

4. **भगवद्रति** किस रस का स्थायी भाव है?

उत्तर : **भगवद्रति** भक्ति रस का स्थायी भाव है।

5. निम्न काव्य पंक्ति में प्रयुक्त रस का नाम लिखिए।

निसदिन बरसत नयन हमारे

सदा रहत पावस ऋतु हम पै जब ते स्याम सिधारे।

उत्तर : वियोग श्रृंगार रस।

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक)

6. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 6

काशी संस्कृति की पाठशाला है। शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित है। काशी में कलाधर हनुमान व नृत्य विश्वनाथ हैं। काशी में हजारो सालों का इतिहास है जिसमें पंडित कंठे महाराज हैं। विद्याधरी हैं, बड़े रामदासजी हैं, मौजुद्दीन खाँ है व इन रसिकों से उपकृत होने वाला अपार जन-समूह है। यह एक अलग काशी है, जिसकी अलग तहजीब है। अपनी बोली और अपने विशिष्ट लोग हैं। इसके अपने उत्सव हैं। अपना गम। अपना सेहरा-बन्ना और अपना नौहा। आप यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चैती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से, बिस्मिल्लाह खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते।

1. काशी शास्त्रों में किस नाम से प्रतिष्ठित है? 2

उत्तर : काशी शास्त्रों में आनंदकानन के नाम से प्रतिष्ठित है।

2. काशी का जनसमूह किन रसिकों से उपकृत है? 2

उत्तर : काशी का जनसमूह पंडित कंठे महाराज, विद्याधरी, रामदास जी, मौजूद्दीन खाँ आदि रसिकों से उपकृत है।

3. काशी एक अलग काशी है, इसका क्या कारण है? 2

उत्तर : काशी अपने आप में एक अलग प्रकार की नगरी है। यहाँ की संस्कृति और तहजीब अलग है। यहाँ की अपनी बोली है और यहाँ विशिष्ट प्रकार के लोगों का निवास है। यहाँ उत्सव और दुख मनाने की परम्परा भी अलग है। यहाँ संगीत को भक्ति से, भक्ति को किसी भी धर्म के कलाकार से, कजरी को चैती से, विश्वनाथ को विशालाक्षी से, बिस्मिल्लाह खाँ को गंगाद्वार से अलग करके नहीं देख सकते।

7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए- $2 \times 4 = 8$

1. भादों की अंधेरी बरसाती रातों की निस्तब्धता को बालगोबिन भगत कैसे संगीतमय बना देते थे?

उत्तर : भादों की रात बहुत अँधेरी थी। थोड़ी देर पहले ही मूसलाधार वर्षा हो चुकी थी। आकाश में बादल अभी भी गरज रहे थे, बिजलियाँ कड़क रही थीं। ऐसे वातावरण में बाल-गोबिन भगत का संगीत स्वर वातावरण में रस घोल रहा था। उनके संगीत स्वर को बादलों का गर्जन, झिल्लियों की झंकार तथा मेंढ़कों का टर्र-टर्र भी अपने कोलाहल में डुबो सकने में असमर्थ था। इस निस्तब्धता में उनका संगीत सबको जगा रहा था।

2. **लखनवी अंदाज** पाठ के नवाब साहब खीरे को खाए बिना ही कैसे तृप्त हो गए?

उत्तर : **लखनवी अंदाज** पाठ के नवाब साहब एक बहुत ही दिखावटी व्यक्ति हैं, जो खीरा काटकर उसकी फाँकों पर

नमक–मिर्च बुरककर उसे सूँघकर खिड़की से बाहर फेंक देते हैं तथा सूँघ लेने से ही तृप्त हो जाने का दिखावा कर देते हैं। इस प्रकार वे वास्तव में तृप्त नहीं होते बल्कि तृप्त होने का केवल दिखावा करते हैं।

3. लेखिका को बचपन में रसोईघर से दूर रहने के लिए किसने और क्यों मजबूर किया?

उत्तर : लेखिका को बचपन में रसोईघर से दूर रहने के लिए उनके पिता ने कहा था। वे रसोईघर को भटियारखाना कहते थे। रसोई में काम करने से मनुष्य की सारी बौद्धिक प्रतिभा नष्ट हो जाती है। रसोईघर में रहकर कोई महत्वपूर्ण काम नहीं हो सकता। वे अपनी बेटी को पढ़ा–लिखाकर उच्च शिक्षा दिलाना चाहते थे। वे गृहकार्य को महत्व नहीं देते थे।

4. फादर बुल्के ने सन्यासी की परम्परागत छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की है, कैसे?

उत्तर : परम्परागत सन्यासी ईश्वर की केवल भक्ति, ज्ञानार्जन अथवा ज्ञान देने में ही अपना समय व्यतीत करते हैं। वे किसी के घर नहीं आते–जाते। फादर बुल्के इन अर्थों में सन्यासी नहीं थे। वे रिश्तों को जीवन भर निभाते थे। उन्हें अपने परिवार की चिंता भले ही न थी किन्तु वे लेखक के सुख–दुख के भागी थे।

5. हालदार साहब की नेताजी के प्रति श्रद्धा को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : **नेता जी का चश्मा** कहानी में हालदार साहब को एक देशभक्त व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। एक साधारण से कस्बे के मुख्य बाजार के चौराहे पर नेताजी की मूर्ति देखकर वे खुश हो जाते हैं तथा वहाँ ऐसी मूर्ति लगाए जाने के प्रयास को सफल और सराहनीय कहते हैं। फौजी वर्दी में नेता जी की मूर्ति देखते ही उन्हें **दिल्ली चलो** तथा **तुम मुझे खून दो.....** आदि देशभक्ति भरे नारे याद आने लगते हैं। नेता जी के लिए उनके मन में अपार श्रद्धा है। कैप्टन द्वारा नेताजी की आँखों पर चश्मा लगाया जाना उन्हें प्रभावित करता है। उसकी मृत्यु पर वे दुखी हो जाते है, उन्हें लगता है अब नेता जी की आँखों पर कोई चश्मा नहीं लगाएगा। परन्तु नेताजी की मूर्ति पर बच्चों द्वारा लगाया गया सरकंडे का चश्मा उन्हें मूर्ति के सामने जाकर खड़ा होने के लिए विवश कर देता है।

8. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– 6

छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।
जीवन में हैं सुरंग सुधियाँ सुहावनी
छवियों की चित्र–गंध फैली मनभावनी;
तन सुगंध शेष रही, बीत गई यामिनी,
कुंतल के फूलों की याद बनी चाँदनी।
भूली–सी एक छुअन बनता हर जीवित क्षण–
छाया मत छूना
मन, होगा दुख दूना।

1. **छाया** का प्रतीकार्थ स्पष्ट कीजिए। 2

उत्तर : **छाया** का प्रतीकार्थ है– अतीत की सुखद यादें। कवि कहना चाहते हैं कि युवावस्था में प्रिय के साथ बिताया गया सुख का समय बार–बार याद मत करो क्योंकि उससे केवल दुख होगा। वे छाया या छलावा मात्र हैं। वो अब कभी लौटकर नहीं आएँगा।

2. चाँदनी को देखकर कवि को किसकी याद आती है? 2

उत्तर : चाँदनी को देखकर कवि को अपनी प्रिया के केशों में गुँथे हुए फूलों की याद आती है। उन्हें अपने प्रेम के सुहाने दिनों की याद आ जाती है।

3. **भूली सी एक छुअन** से कवि का क्या आशय है? 2

उत्तर : कवि का मानना है कि जब हम अपने बीते हुए सुखद दिनों को याद करते हैं तब भूली हुई बातें हमारे मन को बरबस छू लेती हैं। वे छुअन भरे क्षण हमारे पुराने दिनों को मानो हमारे सामने जीवित कर देते हैं।

9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए– $2 \times 4 = 8$

1. गोपियों ने अपने वाक्चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्भव को परास्त कर दिया। उनके वाक्चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : गोपियों ने योग ज्ञान की तुलना कड़वी ककड़ी से की है। उनका कहना था कि जिस प्रकार कड़वी ककड़ी खाई नहीं जाती उसी प्रकार उद्भव द्वारा कही गई योग ज्ञान की बातें उन्हें स्वीकार नहीं है क्योंकि उन्होंने अपने मन में श्रीकृष्ण को बसा लिया है। वे उन्हीं का नाम रटती हैं। कृष्ण ही उनके लिए सबकुछ हैं। उनका मन श्रीकृष्ण में रम गया है। अतः उन्हें किसी योग की कोई आवश्यकता नहीं हैं।

2. परशुराम की धमकी पर लक्ष्मण की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर : परशुराम के क्रोध और धमकी को सुनकर लक्ष्मण ने हँसकर कहा कि उनके कठोर वचन से वे भयभीत नहीं हो रहे हैं बल्कि अपने कुल की परम्परा का निर्वाह करते हुए उनसे क्षमा माँगते हैं क्योंकि उनके कुल में देवता, ब्राह्मण, भगवान के भक्त और गाय को मारने से पाप लगता है तथा अपयश मिलता है। इसी कारण उन्होंने उन पर क्रोध न करके उनके पैरों में गिरने की बात कही।

3. **अट नहीं रही है**, कविता के आधार पर फागुन की मस्ती का वर्णन कीजिए।

उत्तर : फागुन में प्रकृति ने फिर अपना नए सिरे से श्रृंगार किया है। बाग–बगीचे, वन उपवन के सभी पेड़–पौधों पर हरे–भरे और लाल आभा देते नए पत्ते आ गए हैं। छोटे –बड़े अनगिनत रंग–बिरंगे तीव्र मंद सुगंध के फूल चारों ओर मुस्कुराते दिखाई देते हैं। आम के पेड़ों पर बौर आने लगती है। उसकी सुगंध से

मस्त होकर कोयल कूकने लगती है। दूर-दूर तक हरियाली की मखमली चादर बिछ जाती है। लोग मदमस्त हो जाते हैं।

4. संगतकार की आवाज सुंदर, कमजोर और काँपती हुई क्यों नजर आती है?

उत्तर : संगतकार की आवाज मुख्य गायक की गरजदार तथा भारी भरकम आवाज को कोमलता प्रदान करती है। वह अपनी आवाज को कभी ऊपर नहीं उठाना चाहता, वह मुख्य गायक की आवाज की बराबरी भी नहीं करना चाहता। इसलिए उसकी आवाज सुंदर, कमजोर और काँपती हुई नजर आती है।

5. उन्मन और विकल कौन हैं और क्यों हैं?

उत्तर : उन्मन और विकल बादल हैं। वे इसलिए उन्मन और विकल हैं क्योंकि सारा जगत भयंकर गर्मी से परेशान हैं। पेड़-पौधे सूख रहे हैं तथा जीव-जन्तु पानी के अंदर के जीव त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। प्राणी जगत की यह दयनीय दशा उनसे देखी नहीं जा रही है।

10. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए- $3 \times 2 = 6$

1. रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी का क्या कारण था?

उत्तर : रानी एलिजाबेथ के दर्जी की परेशानी का कारण स्थिति के अनुकूल उनकी बनाई जाने वाली पोशाकें थीं। वह यह नहीं समझ पा रहा था कि उनके हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे के लिए वह कैसी पोशाकें बनाए कि रानी प्रसन्न हो जाए। उसने रानी के हिन्दुस्तान दौरे के लिए हिन्दुस्तान से नीले रंग का रेशमी कपड़ा मँगवाकर सूट बनाया था।

2. जितेन नार्गे की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं?

उत्तर : उसने लेखिका का समय बचाया, उत्साह बढ़ाया और यात्रा को रोचक बनाया। एक कुशल गाइड को साहसी और मिलनसार होना चाहिए। स्थानीय भाषा के साथ अंग्रेजी और राष्ट्रभाषा का ज्ञान होना चाहिए। पर्यटक स्थल के रहन-सहन, भौगोलिकता और प्रकृति का अच्छा ज्ञान रखना चाहिए। पर्यटकों की रूचियों और विचारों को समझना चाहिए। मधुरभाषी बनकर यात्रा को सहज और रोचक बनाना चाहिए, ताकि यात्री में आनंद आए।

3. माता का अँचल पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता था। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर : माँ बच्चे को जन्म देती है। बच्चा उसके शरीर और मन का ही हिस्सा होता है। माँ का हृदय ममता के भाव से भरा होता है। ममता के कारण ही बच्चे माँ के पास सबसे अधिक शांति और सुरक्षा महसूस करते हैं। माँ जितनी बच्चे के करीब होती है, बच्चा भी उसके उतना ही करीब होता है। शिशु अवस्था से ही वह माँ के हाथों में सुरक्षा का अहसास करता है। अतः वह भले ही अपना समय पिता या किसी के भी साथ बिताए, परन्तु असुरक्षित होते ही माँ के स्पर्श की और निकटता की आवश्यकता महसूस करता है। हमारे अनुसार कहानी में विपदा के समय बच्चे का पिता के पास न जाकर माँ के पास जाने की यही वजह हो सकती है।

खण्ड-घ (लेखन) 20

11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं के आधार पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए- 10

(1) इंटरनेट

संकेत बिंदु : भूमिका ✲ इंटरनेट क्या है ✲ इसका इतिहास और विकास ✲ इसकी उपयोगिता एवं कार्य क्षेत्र ✲ उपसंहार।

(2) भूमण्डलीय उष्णता (ग्लोबल वार्मिंग)

संकेत : प्रस्तावना ✲ इसका अर्थ ✲ इसके कारण तथा इसका प्रभाव ✲ उपसंहार-इसके निदान के उपाय।

(3) वैश्विक आतंकवाद

संकेत : प्रस्तावना ✲ विश्व में आतंकवाद कहाँ-कहाँ फैला है ✲ भारत में आतंक ने क्या नुकसान पहुँचाया है ✲ विश्व के देशों की प्रतिक्रिया ✲ उपसंहार।

उत्तर :

(1) इंटरनेट

संकेत बिंदु : भूमिका ✲ इंटरनेट क्या है ✲ इसका इतिहास और विकास ✲ इसकी उपयोगिता एवं कार्य क्षेत्र ✲ उपसंहार।

भूमिका- इंटरनेट ने विश्व में जैसा क्रांतिकारी परिवर्तन किया, वैसा किसी भी दूसरी टैक्नोलॉजी ने नही किया। नेट के नाम से लोकप्रिय इंटरनेट अपने उपभोक्ताओं के लिए बहुआयामी साधन प्रणाली है।

इंटरनेट क्या है- यह दूर बैठे उपभोक्ताओं के मध्य अंतर-संवाद का माध्यम हैं, सूचना या जानकारी में हिस्सेदारी और सामूहिक रूप से काम करने का तरीका है, सूचना को विश्व स्तर पर प्रसारित करने का जरिया है और सूचना का अपार सागर है। भारत में इंटरनेट इस्तेमाल करने वालों की संख्या 2018 के जुलाई महीने तक 20 करोड़ पहुँच गई है।

इसका इतिहास और विकास- इंटरनेट का इतिहास पेचीदा है और उसके कई पहलू तकनीकी, संगठनात्मक और सामाजिक संपर्क स्थापित करने की प्रक्रिया आदि बहुत जटिल हैं। 1961 में विश्वव्यापी अंतर-संबंध की जिस कल्पना का जन्म हुआ था, 1983 में स्वतंत्र नेटवर्क की स्थापना के द्वारा इंटरनेट के रूप में वह साकार हुई और इसी वर्ष इंटरनेट एक्टीविटीज बोर्ड की स्थापना भी की गई। इसी वर्ष नवम्बर महीने में पोल मोके पैट्रिक्स द्वारा **डॉक्यूमेन नेमिंग सर्विस** (डी.एन.एस.) का पहला ब्यौरा जारी किया गया। इस प्रकार प्रचलित इंटरनेट का जन्म हुआ।

इसकी उपयोगिता एवं कार्य क्षेत्र– इंटरनेट के बाद का इतिहास मुख्यतः बहुविध उपयोग का है जो नेटवर्क की आधारभूत संरचना से ही संभव हो सका है। बहुविध उपयोग की दिशा में पहला कदम फाइल ट्रांसफर प्रणाली का विकास था। इससे दूर–दराज के कम्प्यूटरों के बीच फाइलों का आदान–प्रदान संभव हो सका। 90 के दशक के आरंभ में इंटरनेट पर सूचना प्रस्तुति के नए तरीके सामने आए। 1991 में मेनेसोआ विश्वविद्यालय द्वारा तैयार गोफर नामक सरलता से पहुँचने योग्य डॉक्यूमेंट प्रस्तुति प्रणाली अस्तित्व में आई।

वर्ल्ड वाइड वेब (डब्ल्यू. डब्ल्यू. डब्ल्यू.) सूचना प्रस्तुति का सरलता से इस्तेमाल करने का योग्य तरीका सिद्ध हुआ। 1993 तक की आरंम्भिक अवधि में वेब की ओर ज्यादा लोगों का ध्यान नहीं गया था, किन्तु 1993 में ग्रैफिकल वेब ब्राउजर का आविष्कार इंटरनेट के क्षेत्र में एक बड़ी घटना थी।

उपसंहार– अब दुनिया के किसी भी हिस्से से आप इंटरनेट के जरिये जुड़ सकते हैं। ई–मेल, ई–कॉमर्स, ई–मनोरंजन, इंटरनेट चर्चा, टेलनेट, इंट्रानेट आदि इसकी अनेक सेवाएँ आज सर्वत्र उपलब्ध हैं।

यद्यपि भारत में इंटरनेट का आरंभ अस्सी के अंतिम वर्षों में हुआ था, किन्तु आज यह जीवन के हर क्षेत्र में परम आवश्यक हो गया है। अब वह दिन दूर नहीं जब लैपटॉप के स्थान पर पाम टॉप हर व्यक्ति की मुठ्ठी में होगा।

(2) भूमण्डलीय उष्णता (ग्लोबल वार्मिंग)

संकेत : प्रस्तावना ✲ इसका अर्थ ✲ इसके कारण तथा इसका प्रभाव ✲ उपसंहार–इसके निदान के उपाय।

प्रस्तावना– भूमण्डलीय उष्णता, जिसे अंग्रेजी में **ग्लोबल वार्मिंग** कहते हैं, आज धरती पर सबसे भयानक संकट है।

इसका अर्थ– भूमण्डलीय उष्णता का अर्थ है– पृथ्वी के तापमान में ग्रीन हाउस गैसों का बढ़ता प्रभाव, जिससे पृथ्वी का वातावरण दिनों–दिन गरमाता जा रहा है।

भूमण्डलीय उष्णता अर्थात् ग्लोबल वार्मिंग के पीछे जिस ग्रीन हाउस प्रभाव का विशेष योगदान है, सरल शब्दों में उसका अर्थ है पृथ्वी के वायुमण्डल में कुछ विशेष गैसों की मात्रा इतनी अधिक बढ़ जाना कि धरती से ऊष्मा बाहर न निकल सके। इन गैसों में कार्बन–डाई–ऑक्साइड, मीथेन, नाइट्रस ऑक्साइड, क्लोरो–फ्लोरोकार्बन और जलवाष्प प्रमुख हैं। भूमंडलीय उष्मण में कार्बन–डाई–ऑक्साइड का सर्वाधिक योगदान है। वैज्ञानिकों के अनुसार 2050 तक कार्बन–डाई–ऑक्साइड की मात्रा दोगुनी हो जाएगी और इससे पृथ्वी का औसत तापमान 1 से 35 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ने की संभावना है।

इसके कारण तथा इसका प्रभाव– सम्पूर्ण विश्व में मौसम के अद्भुत परिवर्तन हो रहे हैं। चीन के कुछ इलाकों में बाढ़, रूस में लू का चलना, ऑस्ट्रेलिया के कुछ भागों में सूखा पड़ना, यूरोप के कुछ हिस्सों में बाढ़ के कारण जान–माल की अपूर्णीय क्षति ग्लोबल वार्मिंग के ही परिणाम हैं। साथ ही ओजोन परत का क्षरण भी एक ज्वलंत समस्या है। ओजोन परत धरती के लिए एक सुरक्षा कवच का काम करती है। भूमण्डलीय उष्मण से ग्लेशियरों का पिघलना शुरू हो चुका है और इससे अनेक वनस्पतियों और जीव–जन्तुओं का अस्तित्व संकटग्रस्त हो गया है। हमारी कृषि पर भी इसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ा है।

उपसंहार– इसके निदान के उपाय– अतः **ग्लोबल वार्मिंग** अथवा भूमण्डलीय उष्णता के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए जीवाश्म ईंधन की खपत को कम करना चाहिए, वनों की अंधाधुंध कटाई न करके वृक्षारोपण करना चाहिए तथा पवन एवं सौर ऊर्जा का अधिकाधिक उपयोग करना चाहिए ताकि वातावरण में कार्बन–डाई–ऑक्साइड की मात्रा कम हो।

(3) वैश्विक आतंकवाद

संकेत : प्रस्तावना ✲ विश्व में आतंकवाद कहाँ–कहाँ फैला है ✲ भारत में आतंक ने क्या नुकसान पहुँचाया है ✲ विश्व के देशों की प्रतिक्रिया ✲ उपसंहार।

प्रस्तावना– आतंकवाद किसी एक क्षेत्र या देश की समस्या नहीं है, अपितु पूरा विश्व आतंकवाद से परेशान है। इसलिए आतंकवाद को वैश्विक आतंकवाद या वैश्विक समस्या कहना ही उचित होगा। आइए, पहले हम समझ लें कि आतंकवाद आखिर है क्या? साफ शब्दों में कहें तो आतंकवाद एक हिंसात्मक कुकृत्य है। आम जनता को अचानक मार डालने या भय फैलाकर हिंसात्मक कार्य करने वाले समूह आतंकवादी कहे जाते हैं। ये समूह सरकारों को अस्थिर करने, किसी आतंकी को छुड़ाने, फिरौती वसूल करने या बेवजह दूसरों को दुख पहुँचाने के लिए हिंसा फैलाते हैं।

विश्व में आतंकवाद कहाँ–कहाँ फैला है– विश्व की इस उपेक्षा का लाभ उठाकर आतंकवादी संगठन अंदर ही अंदर अपने आपको मजबूत करते रहे और आज आतंकवाद के राक्षस ने कहीं भी किसी को भी परेशान करने की ताकत इकट्ठी कर ली है। अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमला हुआ, तब अमेरिका को होश आया कि यह आतंकवाद तो किसी को नहीं छोड़ता, इसका एकमात्र मकसद भय फैलाना होता है। रूस के सेंट पीट्र्सबर्ग मेट्रो स्टेशन पर ताजातरीन हमला इसका उदाहरण है। यह पहली बार नहीं है कि रूस किसी आतंकी हमले का शिकार हुआ है। फ्रांस में पेरिस की शार्ली एब्दो पत्रिका के कार्यालय पर हमला, पाकिस्तान में आए दिन होते हमले (जो खुद आतंक के कारखाने के रूप में प्रसिद्ध है) पेशावर (पाकिस्तान) में स्कूली बच्चों पर हमला, जर्मनी जैसे देशों में ट्रक अथवा अन्य वाहनों द्वारा लोगों को रौंदा जाना, भारत में संसद पर हमला, मुम्बई हमला, पठानकोट, उड़ी हमले जैसी खौफनाक वारदात को अंजाम देना, बोको द्वारा महिलाओं को अगवा कर हत्या जैसे जघन्य नृशंस घटनाक्रम, अफगानिस्तान, इराक आदि में तालिबानी व आई.एस. के आतंक से तो पूरा विश्व ही परिचित है।

भारत में आतंक ने क्या नुकसान पहुँचाया है– भारत एक लम्बे समय से पड़ोसी मुल्कों द्वारा प्रायोजित आतंकवाद से जूझता रहा है। भारतीय सैनिकों ने देश में और सीमाओं पर आतंकवादियों का सदैव खात्मा किया है किन्तु इससे देश की प्रगति में तो कहीं न कहीं गतिरोध पैदा होता ही है और जान–माल के नुकसान पर दुख भी है। समय–समय पर भारत ने समृद्ध और विकसित देशों के समक्ष यह समस्या उठाई है, उन्होंने कभी ध्यान दिया तो कभी नहीं।

विश्व के देशों की प्रतिक्रिया– स्थिति की गंभीरता को देखते हुए सभी प्रमुख देशों के राष्ट्र प्रमुखों ने न केवल आतंकवाद का विरोध किया है अपितु निरपराध लोगों को मारने और संपत्ति को नुकसान पहुँचाने की कड़ी शब्दों में भर्त्सना की है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वैश्विक आतंकवाद पर भारत की आपत्ति दर्ज कराते हुए इसके खिलाफ साझा रणनीति अपनाने का आह्वान किया है। उन्होंने आशा जताई है कि यदि विभिन्न देश साझा रणनीति अपनाएँ तो आतंकवाद के खिलाफ सफलता हासिल की जा सकती है।

उपसंहार– अतः हम कह सकते हैं कि निरपराध लोगों की हत्या करने वाले मानवता के दुश्मनों से यदि लड़ना है तो पूरे विश्व को एक जुट होकर लड़ना होगा, तभी आतंकवाद को मिटाया जा सकेगा।

12. अपने क्षेत्र में पुलिस गश्त बढ़ाने हेतु अपने पुलिस अधिकारी को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए। 5

उत्तर :

सेवा में,
पुलिस अधिकारी,
किशनपोल बाजार,
नई दिल्ली।

विषय : कॉलोनी में यथोचित सुरक्षा प्रबंध हेतु अनुरोध।

महोदय,

गत एक सप्ताह से यमुना विहार क्षेत्र में अपराधों की संख्या में बहुत वृद्धि हुई है। यहाँ आए दिन चोरियाँ होती हैं। अभी दो दिन पहले ही यहाँ से पाँच कारों और दो स्कूटरों की चोरी हुई है। कई घर लूटे जा चुके हैं। इतना ही नहीं बल्कि राह चलती औरतों और लड़कियों को भी सताया जाता है, जो भी उन्हें बचाने के लिए आगे आता है, उसके साथ मारपीट की जाती है। इन हालात में हमारा यहाँ रहना खतरे से खाली नहीं है।

अतः आपसे प्रार्थना है कि आप इस कॉलोनी के निवासियों के लिए पर्याप्त सुरक्षा का प्रबंध करें और साथ ही विशेष पुलिस गश्त की भी व्यवस्था करें।

आशा है कि आप हमारी प्रार्थना की ओर ध्यान देंगे और इस दिशा में शीघ्र ही कोई ठोस कदम उठाएँगे।

धन्यवाद।

भवदीय

सुनिल शर्मा
66, किशनपोल बाजार
नई दिल्ली–110094
दिनांक : 18 फरवरी, 2018

अथवा

आपकी बहन आठवीं कक्षा में है। शिक्षा के प्रति अनुशासित व सचेत रहने की सलाह देते हुए अपनी बहन को एक पत्र लगभग 80–100 शब्दों में लिखिए।

उत्तर :

परीक्षा भवन,
नई दिल्ली।
दिनांक : 12 सितम्बर, 2018

प्रिय अनुजा शारदा,

सस्नेह आशीर्वाद।

मुझे ज्ञात हुआ है कि तुम कुछ उद्धंड और अशिष्ट होती जा रही हो। गुरूजन के प्रति भी तुम्हारा व्यवहार अच्छा नहीं है। यह सुनकर मुझे बड़ा दुख हुआ। मैं तुम्हारे लिए अनुशासित जीवन की उपयोगिता पर अपना सुझाव लिख रहा हूँ। आशा है तुम इनको अपने जीवन में ढालने का प्रयास करोगी।

अनुशासन जीवन का मुख्य आधार है। यह सदाचार की नींव है। यह बड़प्पन और गौरव की वृद्धि करने वाला है। यह जीवन की प्राणवायु है। इसके बिना मानव और समाज का अस्तित्व असंभव है। अनुशासनहीन जीवन बिना पतवार के जहाज के समान है। अनुशासन हमारी विनाशकारी भावनाओं पर अंकुश रखता है। इसका अभ्यास विद्यार्थी जीवन में ही सुचारू रूप से हो सकता है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन का महत्व सबसे अधिक है। अशिष्ट और अनुशासनहीन छात्र कभी भी अच्छा नागरिक नहीं बन सकता। विद्यार्थी ही हमारी आशा और स्वतंत्र भारत के आधार स्तंभ हैं। देश का भार वहन करने के लिए उन्हें अनुशासित जीवन व्यतीत करते हुए अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति का विकास करना चाहिए। तभी वे अपने माता–पिता, गुरूजन तथा देश का गौरव बढ़ा सकते हैं।

आशा है, तुम आज से ही अनुशासित जीवन व्यतीत करने का संकल्प लोगी और गुरूजन का आदर करोगी।

तुम्हारा शुभचिन्तक,
कमल

13. किसी शैक्षणिक संस्थान में उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु 25–50 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। 5

उत्तर :

कैरियर सेंटर फॉर हायर एंड इनक्लूसिव एजूकेशन

प्रमुख आकर्षण : ● सीटीईटी ● डीएसएसएसबी
● क्लर्क ग्रेड ● बैंकिंग कोचिंग

कंप्यूटर कोर्स व हॉबी क्लासेस के अलावा सभी क्षेत्रों में स्नातक व स्नातकोत्तर डिग्री पाठ्यक्रमों में प्रवेश

240, फ्रैंड्स एनक्लेव, नांगलोई, दिल्ली-80,
मोबाईल : 9212465781, 9212465782

अथवा

किसी प्रिय पुस्तक के बारे में एक आकर्षक विज्ञापन 25-50 शब्दों में तैयार कीजिए।

उत्तर :

मन-मंदिर की शुद्धता का स्त्रोत
पढ़िए नित मानस का स्त्रोत

रामचरित मानस

घर-परिवार से लेकर विश्व-व्यवहार तक सबसे सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने की कला सिखाती है

रामचरितमानस, रमन प्रेस, मेरठ

Download unsolved Version of this solved paper from www.cbse.online

WWW.CBSE.ONLINE

This sample paper has been released by website www.cbse.online for the benefits of the students. This paper has been prepared by subject expert with the consultation of many other expert and paper is fully based on the exam pattern for 2019-2020. Please note that website www.cbse.online is not affiliated to Central board of Secondary Education, Delhi in any manner. The aim of website is to provide free study material to the students.